संगीत (तबला) के विषय में Ph.D की उपाधि हेतु प्रस्तुत संक्षेपिका

" स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन "

Synopsis on

"Swatantra Tabla Vadan Mein Vistarksham Rachanaonka Tulanatmak Adhyayan"

डिपार्ट्मेंट ऑफ तबला

फॅकल्टी ऑफ परफॉर्मींग आर्ट्स

दि महाराजा सयाजीराव युनिव्हर्सिटी ऑफ वडोदरा (गुजरात)

शोधार्थी

दिपक प्रकाश दाभाडे

मार्गदर्शक

प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे

रजि . नं. FOPA / 75

रजि. दिनांक 12/02/2018

१. प्रस्तुत शोध विषय पर शोधप्रबन्ध करने की आवश्यकता

(Need for Research on this topic)

तबला यह वाद्य लगभग 400 साल पुराना अवनद्ध वाद्य हैं | गायन तथा वाद्य के लिए साथ-संगत करने के उद्देश्य से निर्माण हुआ यह साज साथ-संगत और स्वतंत्र वादन इन दोनों विधाओं में अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहा हैं | प्राचीन काल में धृपद-धमार गायन प्रकार के साथ साथ-संगत करने के लिए पखावज वाद्य का उपयोग किया जाता था | धृपद-धमार गायकी की संगत में पखावज वादक को मुक्त रूप से वादन करने की काफी छूट प्राप्त होती थी और पखावज वादक भी अपना वादन-कौशल्य अधिक सक्षमता के साथ प्रदर्शित किया करता था | किन्तु जब 18 वी शताब्दी में 'ख्याल गायकी' का उद्‌गम हुआ और वह अधिक लोकप्रिय हो गई, तब साथ संगत के लिए पखावज के अलावा किसी दूसरे अवनद्ध वाद्य की आवश्यकता महसूस हुई जो ख्याल गायन को अपेक्षित साथ-संगत कर सके और ये कमी तबला इस वाद्य ने पूरी की | सभी अवनद्ध वाद्यों में कुछ प्रमाणतक सुर का निर्माण होता ही हैं लेकिन तबला इकलौता ऐसा साज था जो तानपुरे के सुर के साथ काफी एकरूप हो सके | तबला वाद्य के उद्‌गम के बाद जो भी तबला वादक थे वो बहुतांश पखावज वादक ही थे जो तबला बजाते थे | धृपद-धमार इस गायन के साथ मुक्त वादन करने की आदत होने की वजह से ख्याल गायन के साथ अपेक्षित संयमित साथ-संगत में प्रतिभावान तबला वादकों को अपनी विद्‌वत्ता, कौशल्य एवं प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलना ही बंद हो गया इसके फलस्वरूप इन वादकों ने अपनी खुशी के लिए स्वतंत्र तबला वादन करना शुरू किया | स्वतंत्र तबला वादन के लिए विशिष्ट वादन साहित्य की आवश्यकता थी इसके लिए कई विद्‌वान प्रतिभाशाली वादकों द्वारा अपनी शैली

नुसार कई अनेक रचनाओं का निर्माण किया गया | इन रचनाओं की वजह से तबला वाद्य साथ-संगत और स्वतंत्र वादन इन दोनों विधाओं में एक समृद्ध एवं परिपूर्ण वाद्य के रूप में आगे आया और समूचे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब हो गया | तबला वाद्य की अपनी एक अलग भाषा होने की वजह से स्वतंत्र तबला वादन में बंदिशों के अनेक प्रकार बन गए, जिनका वर्गीकरण दो भागों में होता हैं जिसे विस्तारक्षम रचना और पूर्वसंकल्पित रचना के नाम से संबोधित किया जाता हैं |

विस्तारक्षम रचना याने जिस रचना का विस्तार किया जाता हैं उस रचना को विस्तारक्षम रचना कहते हैं | विस्तार क्षमता ही इन रचनाओं का प्राण तत्व होता हैं | विस्तारक्षम रचनाओं में खाली-भरी के तत्व का सुनियोजित रूप से उपयोग किया जाता हैं | स्वतंत्र तबला वादन में पूर्वसंकल्पित रचनाओं की तुलना में विस्तारक्षम रचनाओं का वादन तबला वादकों द्वारा अधिक समय तक किया जाता हैं | स्वतंत्र तबला-वादन में जो भी विस्तारक्षम रचनाएँ बजाई जाती हैं, उन विस्तारक्षम रचनाओं के अंतर्गत मुख्यतः पेशकार, कायदा, एवं रेला ये तीन प्रमुख रचनाएँ आती हैं | पर इन तिनों रचनाओं के प्रयोग का सांगितीक उद्देश्य भिन्न-भिन्न स्वरूप का होता हैं तथा विस्तारक्षम रचनाओं में लग्गी, लड़ी, बाँट जैसे अन्य भी विस्तारक्षम रचनाएँ हैं, लेकिन उनका विस्तार प्रायः पेशकार, कायदा, रेला जैसे नहीं होता | विधिवत स्वतंत्र तबला वादन करते समय विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग किस तरह से किया जाता हैं? विस्तारक्षम रचना बजाते समय किस प्रकार के अनुशासन का पालन करना पड़ता है? इसके साथही रचना का विस्तार सौंदर्य इनके बारे में अधिकतर जानकारी उपलब्ध ना होने की वजह से प्रस्तुत शोधप्रबन्ध की माध्यम से इन तथ्यों को उजागर करने का एक प्रामाणिक प्रयत्न शोधार्थी द्वारा किया गया है |

'स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन' इस विषय पर अभी तक कोई भी अनुसंधान कार्य नहीं हुआ हैं इसी कारण शोधार्थी को प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान कार्य करने की आवश्यकता महसूस हुई | तबले में अभी तक जो भी शोधकार्य हुए हैं, उनमें तबला वाद्य

का उद्गम और विकास, घराना या किन्हीं दो घरानों की तुलना या किसी ख्याति प्राप्त कलाकार का जीवन दर्शन, सांगितिक योगदान, स्वतंत्र तबला वादन या साथ-संगत आदि विषयों पर ही जादातर संशोधन किए हुए दिखाई देते हैं, किन्तु तबले की विस्तारक्षम रचना इस विषय पर अभी तक कोई भी अनुसंधान कार्य दिखाई नहीं देता हैं | तबले पर अनेक विद्वानों द्वारा लिखी बहुत सी किताबें मौजूद हैं, परन्तु जहाँ तक मेरी खोज है, इनमें पं. सुधीर माईणकर और श्री. जमुनाप्रसाद पटेल इनकी लिखी किताबों के अलावा अन्य किताबों में विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में जो भी जानकारी हैं, उनमें जादातर विस्तारक्षम रचनाओं का विस्तार ही दिखाई देता हैं इसलिए 'स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन' इस विषय को लेकर अनुसंधान कार्य होना शोधार्थी के दृष्टि से अत्यंत आवश्यक था |

2. परिकल्पना (Hypothesis)

भारतीय संगीत में गायन, वादन, नृत्य के साथ लय-ताल संबंधी अनेक अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से ही होता आ रहा हैं | प्राचीन काल में जिन अवनद्ध वाद्यों का उल्लेख मिलता हैं उनमें भेरी, दर्दुर, ढ़ोल, नगाड़ा, मृदंग या पखावज आदि प्रमुख वाद्य आते हैं, इनमें मृदंग या पखावज का प्रयोग आज भी होता हुआ दिखाई देता हैं तथा ढ़ोलक का उपयोग उत्तर भारत में लोकगीतों के साथ बजाने में किया जाता हैं लेकिन आधुनिक युग के ताल संबंधी वाद्यों में सबसे प्रमुख व लोकप्रिय स्थान तबला इस वाद्य को ही प्राप्त हुआ है | आधुनिक काल से लेकर आज तक कई अवनद्ध वाद्यों का निर्माण हुआ हैं लेकिन इन अवनद्ध वाद्यों पर तबले की तरह विस्तारक्षम रचनाओं को बजाया नहीं जाता है | तबला इस वाद्य की बनावट तथा बाज अन्य अवनद्ध वाद्यों की तुलना में बिल्कुल ही अलग होने की वजह से तबला इस वाद्य पर ही विस्तारक्षम रचनाओं को बजाना मुमकीन हुआ | सभी तालो में खाली-भरी होती हैं, लेकिन तबला इस वाद्य ने विस्तारक्षम रचना द्वारा दिखा दिया की रचनाओं में भी खाली-भरी होती हैं | विस्तारक्षम रचनाओं में खाली-भरी का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व विद्यमान रहता है तथा यह प्रकार अन्य किसी भी लय-ताल वाद्यों में नहीं पाया जाता हैं | फलतः

तबला वाद्य अन्य लय-ताल वाद्यों की तुलना में अत्यंत श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण माना जाता है, इसलिए स्वतंत्र तबला वादन में पेशकार, कायदा, रेला आदि विस्तारक्षम रचनाओं की वजह से किस प्रकार तबला वाद्य ने अपनी एक अलग पहचान बनाई हैं? आदि विषयों का भी शोधार्थी द्वारा चयन किया गया हैं |

तबले के सभी घरानों में विस्तारक्षम रचनाएँ बजायी जाती हैं, लेकिन सभी घरानों का इन विस्तारक्षम रचनाओं की तरफ देखने का अलग नजरिया हैं, विस्तार के प्रति अलग सोच-विचार हैं | प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के माध्यम से शोधार्थी ने सभी घरानों की विस्तारक्षम रचनाओं को, उनके विस्तारविधि को लिपिबद्ध करके दर्शाने का प्रयास इस शोध प्रबन्ध में किया हुआ हैं | पखावज को तबले का पितासाज कहा जाता हैं परन्तु पखावज पर विस्तारक्षम रचनाओं में प्रायः रेला बजाया जाता है और पखावज पर रेले में तबले की तरह खाली-भरी नहीं बजती है | इसके बारे में अध्ययन करके शोधार्थी ने अपने विचार इस शोधप्रबन्ध के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं | अधिकतर स्वतंत्र तबला वादन ताल त्रिताल में ही प्रस्तुत किया जाता है | त्रितालेतर तालों में वादन करते समय विस्तारक्षम रचनाओं का विस्तार ताल त्रिताल जितना असरदार क्यों नहीं होता? इसका भी अध्ययन करने का एक प्रामाणिक प्रयास शोधार्थी ने इस शोधप्रबन्ध में किया हैं | साथ-संगत करते समय तबला वादक इन विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग अपने वादन में किस प्रकार करता हैं, तथा साथ-संगत में विस्तारक्षम रचनाओं के विस्तार में कौनसे बदलाव करने पड़ते हैं? इसके लिए शोधार्थी ने कई विद्वानों के प्रत्यक्षरूप से साक्षात्कार लेकर उनके अनुभव तथा विचार इनका उपयोग भी इस कार्य को सफल बनाने के लिए इस शोधप्रबन्ध में किया हुआ हैं | पहले के समय तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं के विस्तार की पारंपारिक पद्धती एवं वर्तमान समय में आज के तबला वादकों द्वारा किए जानेवाली विस्तारक्षम रचनाओं की प्रस्तुति में कौनसे बदलाव हुए हैं? इन परिकल्पनाओं का उपयोग इस शोध प्रबंध के नियोजित ध्येय को निश्चित रूपसे प्राप्ति करने के हेतु से शोधार्थी द्वारा एक सफल प्रयास किया गया है |

3. आँकड़े एकत्रित करने की विधि (Data Collection)

1. विस्तारक्षम रचना और उनके ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के हेतु विस्तारक्षम रचनाओं से संबंधित अधिकतर किताबे उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए प्रस्तुत शोधकार्य को लिखने के लिए जो भी विद्वान तबला वादक तथा गुरू हैं उनसे प्रत्यक्ष रूपसे साक्षात्कार करके तथा उनके अनुभव तथा विचारों की सहायतासे तथ्यों को जुटाने का प्रयास शोधार्थी ने इस शोधप्रबन्ध में किया है |

2. इसके अलावा रेड़िओ, दुरदर्शन तथा अन्य टेलिव्हिजन पर प्रसारित किए गए टी.व्ही.चॅनेल्स जिनमें INSYNC, ड़ी.ड़ी.भारती, ड़ी.ड़ी.राज्यसभा जैसे वाहिनीयों पर विद्वानो द्वारा साक्षात्कार करके तथा वार्तालाप के ध्वनिमुद्रित तथा ध्वनिचित्रित के माध्यम से भी तथ्यों को संकलित करने का प्रयास इस शोधप्रबन्ध में किया गया है |

3. समाचार पत्रिका, साप्ताहिक, मासिक तथा प्रसारित होनेवाले विभिन्न लेखों का अवलोकन भी प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के लिए किया गया है |

4. तबले के कई विद्यार्थी, गुरू, कलाकारों को प्रश्नावली भेज कर तथा प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार कर कई आँकड़े संकलित करके तथ्यों को सामने लाने का प्रयास इस शोधप्रबन्ध में किया गया है |

5. आजतक इस विषय पर पुस्तकों में वर्णित किए गए शोधकार्य पर भी दृष्टिपात कर जानकारी हासील करने का प्रयत्न इस शोधप्रबन्ध में किया गया है |

6. आज का युग इंटरनेट, आय.टी.टेक्नॉलॉजी का है | इसमें संगीत से संबंधित कई जानकारियाँ विद्यमान हैं | इसके साथ ही गुगल, यू.ट्यूब, ट्वीट्र, फेसबुक, इन्स्टाग्राम, वॉटसअप

जैसे सोशल मीड़िया की सहायता से अनेक वादक, कलाकार, तबले के छात्र इस विषय के बारे में क्या सोच-विचार रखते हैं इसका उपयोग भी प्रस्तुत शोधप्रबन्ध को लिखने के लिए किया गया है |

4. पुनर्विलोकन (Review Of Literature)

प्रस्तुत विषय में संबधित आँकड़े एकत्रित करने के पश्चात् सबका पुनर्विलोकन किया गया हैं और त्याज्य आँकड़ों को छोड़ दिया गया हैं तथा संबंधित तथ्यों को इस शोधप्रबन्ध में विश्लेषणात्मक रूप सें प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है |

5. उद्देश्य (Objectives)

विस्तारक्षम रचना यह संकल्पना सिर्फ तबला इस वाद्य के साथ ही शुरू हुई है और विस्तारक्षम रचना बजाना सिर्फ तबला इस वाद्य पर ही अनुकूल था इस प्रकार तबला वाद्य के 'बाज और बनावट' की वजह से ही विस्तारक्षम रचनाओं का वादन तबले पर ही करना सम्भव हो पाया हैं, इस तथ्य से जन को परिचित कराने के उद्देश्य से इस शोधप्रबन्ध को शोधार्थी द्वारा लिखा गया है | तबला इस वाद्य की बनावट तथा बाज अन्य अवनद्ध वाद्यों की तुलना में किस प्रकार अलग है? तबला वाद्य पर ही क्यों विस्तारक्षम रचनाएँ बजाना मुमकीन हो सका? तबले के सभी घरानों ने विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग स्वतंत्र तबला वादन में किस प्रकार किया? सभी विस्तारक्षम रचनाएँ एक-दूसरे से अलग कैसे हैं? तबले के सभी घराने विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में किस प्रकार अपने सोच-विचार रखते हैं? और सभी घरानों ने इन विस्तारक्षम रचनाओं के लिए अपना योगदान किस प्रकार दिया हैं? स्वतंत्र तबला वादन में बजनेवाली विस्तारक्षम रचनाएँ एक दूसरे से भिन्न किस प्रकार है? विस्तारक्षम रचनाओं का अपना एक अलग सौंदर्य हैं, एक अलग मिजाज हैं, इसलिए विस्तारक्षम रचनाओं में खाली-भरी का महत्व, रचना-विस्तार, विस्तारक्षम रचनाओं को बजाने के लिए आवश्यक अनुशासन, गणितीय सौंदर्य आदि तथ्यों के आधार पर गहराई के साथ तुलनात्मक अध्ययन करके रचना विधि, विस्तारप्रक्रिया व प्रस्तुतिकरण की रीति से अवगत कराने के उद्देश्य से इस शोधप्रबन्ध को शोधार्थी द्वारा लिखने का प्रयास किया गया है |

पखावज को तबले का जनकवाद्य कहा जाता है | पखावज वाद्य पर विस्तारक्षम रचनाओं में पेशकार, कायदा नहीं बजाया जाता, प्रायः पखावजपर विस्तारक्षम रचनाओ में सिर्फ रेला बजाया जाता है | पखावज़ वाद्य तबले से काफी बड़ा है तथा बाएँ मुख पर गीले आटें का उपयोग किया जाता है तथा हथेली से बज़ाने के कारण पखावज़ तबला वाद्य की तुलना में उतना द्रुत लय में नहीं बज पाता है | पखावज पर रेले में तबले की तरह खाली-भरी नही बजती है, इसलिए क्या कारण है कि पखावज का बाज और बनावट विस्तारक्षम रचनाएँ बजाने के लिए तबले की तरह अनुकूल नही रहा हैं? आदि मुद्दों के आधार पर लक्ष प्राप्ति की उद्देश्य से शोधार्थी द्वारा इस शोधप्रबन्ध को लिखने का प्रयास किया गया हैं | साथ-संगत करते समय विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग तबला वादकों द्वारा अपने वादन में किस प्रकार किया जाता हैं? तथा विस्तारक्षम रचनाओंका अस्तित्व साथसंगत करते समय किस प्रकार रहना चाहिए इन चीजो को भी सामने लाने का उद्देश्य इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से पूरा किया गया है | इसके अतिरिक्त अन्य उद्देश्य यह भी हैं कि, इस शोध प्रबंध से आनेवाली पीढ़ी प्रस्तुत विषय से संबधित कोई भी जानकारी हासील करना चाहे तो वह इससे लाभ उठा सकेगी और इससे आगे यदि इस विषय से संबंधित या अन्य कोई शोधार्थी जब भी इस विषय पर अनुसंधान कार्य करने का प्रयास करेंगे तो उनका आधार यह शोधग्रंथ बने और शोधार्थीयों को इस शोधग्रंथ की सहायता हो |

6. शोध कार्यपध्दती एवं योजना

(Research Methodology & Planning)

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध प्रयोगनिष्ठ शोधकार्य पध्दतिपर प्रस्तुत किया गया हैं तथा इसके अतंर्गत प्रयोगनिष्ठ तथ्यों का संकलन करके इन्हें प्रस्तुत किया गया हैं | विविध घरानों के इस विषय से संबंधित विद्‌वानों के विस्तारक्षम रचना के बारे में विचारों का संकलन इस शोधप्रबन्ध के लिए किया गया हैं | प्रस्तुत संशोधन के लिए इस विषय से संबंधित कई विद्‌वानों के प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार करके जानकारी प्राप्त की गई हैं और कई विद्‌वानों से तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए प्रश्नावली का प्रयोग भी किया गया है | इस विषयानुसार तथ्यों को जुटाने के लिए तबले के अनेक कलाकार एवं गुरूओं का योगदान और अनुभवपूर्ण विचार इ. इस शोधप्रबन्ध द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं, इसके साथ

ही तबले के संदर्भ में अनेक ग्रंथ एवं ग्रंथकार इनकी सहायंता भी तथ्यों को जुटाने के लिए की गई हैं | मेरा प्रयास है कि इस कार्य पध्दति के अंर्तगत तथ्यों का सरलीकरण हो जिससे, जनमानस को यह शोधकार्य ग्राहय हो सके |

7. स्थायी अध्याय (Chapters)

इस शोधप्रबन्ध को मौलिक रूप से संपन्न करने के लिए हमने इस शोधप्रबन्ध को कुल 6 स्थायी अध्यायों में विभाजित किया गया हैं | यह अध्याय निम्न रूप में है -

1. **तबले कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमी**

तबले की रचनाओं को जानने से पहले तबला वाद्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना अत्यंत आवश्यक था इसलिए इस अध्याय में सबसे पहले तबला इस वाद्य का उद्‌गम एवं विकास तथा तबले के बाज और बनावट को प्रस्तुत किया गया है | इसमें तबले के अनेक विदवानोंद्‌वारा तबले के निर्मिति के बारे में सोच-विचारों का अवलोकन भी किया गया है | तबले के बाज का संबंध घरानों के साथ होने की वजह से प्रस्तुत अध्याय में घरानों का निर्माण तथा पारंपरिक गुरू-शिष्य परंपरा इस पर भी दृष्टि ड़ालने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है | इस अध्याय में कुछ प्रचलित अवनद्ध वाद्यों के बारे में भी जानकारी दी गई हैं | किस प्रकार विस्तारक्षम रचनाओं को बजाने के लिए सिर्फ तबला वाद्य ही अन्य अवनद्ध वाद्यों की तुलना में अनुकूल रहा इसके बारे में विभिन्न मुद्दों के आधार पर अध्ययन करके इस अध्याय में अपने विचार रेखांकित करने का शोधार्थी ने प्रयत्न किया हुआ हैं |

2. **स्वतंत्र तबला वादन कि विस्तारक्षम रचनाएँ एवं उसका स्वरूप**

स्वतंत्र तबला वादन में पेशकार, कायदा, रेला आदि विस्तारक्षम रचनाओं को बजाया जाता हैं तथा अन्य विस्तारक्षम रचनाओं में रौ, लड़ी, लग्गी, बाँट इन रचनाओं का भी समावेश स्वतंत्र तबला वादन में किया जाता हैं | विस्तारक्षम रचनाओं का स्वरूप जानने से पहले स्वतंत्र तबला वादन के पूर्व तबले का स्थान, स्वतंत्र तबला वादन के दृष्टिकोणसे विस्तारक्षम रचनाओं का क्रम इन्हें प्रस्तुत अध्याय

में शोधार्थी ने दर्शाने का अत्यंत कष्ट्साध्य प्रयास किया है | तबले में बजायी जानेवाली विस्तारक्षम रचनाएँ पेशकार, कायदा, रेला तथा लग्गी, लड़ी, बाँट् इनके बारे में भी विधिवत जानकारी इस अध्याय में दी गई हैं | विस्तारक्षम रचनाएँ विशिष्ट् जाति पर आधारित होती है | इस अध्याय में सभी जातियों का अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया गया हैं | कई पीढ़ीयों से हम ताल त्रिताल में ही अधिकतर तबला वादन सुनते आ रहे हैं | त्रितालेतर तालो में विस्तारक्षम रचना के बारे में तबला वादक का सोच-विचार किस प्रकार रहता हैं? तथा विस्तारक्षम रचनाओं के पारंपरिक वादन के अंतर्गत वर्तमान समय के तबला वादन में आए हुए परिवर्तन को भी प्रस्तुत करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा इस अध्याय में किया गया है | साथ ही, प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने पूर्वसंकल्पित रचनाओंकी प्राथमिक जानकारी देने की कोशिश की है |

3. विस्तारक्षम रचनाओं की विस्तारक्रिया

प्रस्तुत अध्याय में तबले में बजायी जानेवली विस्तारक्षम रचनाएँ और उन विस्तारक्षम रचनाओं में फर्शबंदी का उपयोग, रचना की विस्तार पद्धति, विस्तार सौंदर्य, गणितीय सौंदर्य, छंद, आदि विषयों पर दृष्टि ड़ाली गई हैं | प्रस्तुत अध्याय में, सभी विस्तारक्षम रचनाओं की विस्तारक्रिया को पलटो के साथ लिपिबद्ध करके दर्शाया गया हैं | इन विस्तारक्षम रचनाओं का विस्तार विभिन्न जाति में भी लिपिबद्ध किया है | प्रस्तुत अध्याय में ताल त्रिताल के साथ ही अन्य तालों में भी विस्तारक्षम रचनाओं की विधिवत विस्तारपद्धति के साथ इस अध्याय में लिपिबध्द करके दर्शाया गया हैं |

4. विस्तारक्षम रचनाओं की विस्तारक्रिया ः सभी घरानों की दृष्टिकोनसे

तबले के सभी घरानों के तबला वादकों ने अपनी विशिष्ट् शैली के साथ इन विस्तारक्षम रचना-स्वरूप की सौंदर्यता में वृध्दि करके अपनी शैली को अगले पीढ़ी तक आगे बढ़ाया हैं | हर घराने की अपनी एक अलग वादन-शैली होती है | तबले के प्रत्येक घराने का उस रचना को देखने का नजरिया अलग होता है, हर घराने का दूसरे घराने को देखने का एक अलग वैचारिक अनुशासन

होता हैं | सभी घरानों ने विस्तारक्षम रचनाओं के लिए अपना योगदान किस प्रकार दिया हैं? शोधार्थी ने इसका अध्ययनपूर्वक संकलन किया है, साथ ही सभी घरानों की विस्तारक्षम रचनाओं को लिपिबद्ध करके इस अध्याय के द्वारा दर्शाने का प्रयास किया हैं |

5. विस्तारक्षम रचनाओं की तुलना

स्वतंत्र तबला वादन में पेशकार, कायदा, रेला, रौ, लड़ी, लग्गी, बाँट़ इत्यादी विस्तारक्षम रचनाओं का वादन किया जाता हैं, लेकिन सभी रचनाओं का स्वरूप एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं | इन विस्तारक्षम रचनाओं के वादन का तौर-तरिका अलग हैं, इन रचनाओं का अलग से अनुशासन हैं इसलिए इस अध्याय में विस्तारक्षम रचनाओं की एक दूसरे के साथ विस्तारक्रम के दृष्ट़िकोण से तुलनात्मक विवेचन करने का शोधार्थी ने कष्ट़साध्य प्रयास किया हैं, इसके साथ ही प्रस्तुत अध्याय में, विस्तारक्षम रचना के निहित सौंदर्य के बारे में भी विचारपूर्वक अध्ययन किया गया हैं |

6. साथसंगत में विस्तारक्षम रचनाओं का स्थान

तबला वाद्य की निर्मिति और विकास प्रथमतः साथ-संगत के लिए ही हुआ | स्वतंत्र तबला वादन में बजनेवाली इन विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग वाद्यसंगीत तथा कथक नृत्य के साथ किया जाता हैं | साथ-संगत करते समय तबला वादक द्वारा विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग किस प्रकार किया जाता हैं? इसके लिए तबला-वादक को साथ-संगत करते समय प्रमुख कलाकार के अनुरूप अधिक वादन करते समय किस प्रकार की चुनोतीयों का सामना करना पड़ता हैं? आदी विषयों पर शोधार्थी ने प्रकाश ड़ालने का प्रयास इस अध्याय में किया है |

7. उपसंहार (Conclusion)

इस अध्याय में 'स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन' इसके अन्तर्गत अन्य सभी अध्यायों का संक्षिप्त रूप में विवेचन किया गया है | प्रस्तुत अध्याय में इस विषय के अंतर्गत विभिन्न महत्वपूर्ण ग्रंथो, सांगितिक-साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ इनका गहन अध्ययन करके

उनके अंदर व्याप्त, आवश्यक एवं महत्वपूर्ण जानकारी तथा विद्वान-कलाकारों, तबला-वादकों व अन्य विधा के कलाकारों, विशेषज्ञों के साक्षात्कार के जरिए जो भी तथ्य सामने आऐ हैं और इस शोध-विषय का समग्र अध्ययन करने के पश्चात् जो भी निष्कर्ष परिणाम स्वरूप उदघटित हुए हैं उन्हें ही इस शोधप्रबन्ध में प्रस्तुत करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है |

अतः मेरे इस शोध कार्य से भावी पीढ़ी लाभान्वित हो सकती है एवं भविष्य में इस क्षेत्र में और अधिक शोध कार्य की सम्भावनाएँ हो सकती हैं | इस दृष्टि से भी यदी मेरा शोध कार्य सफल हो सका तो में अपने इस प्रयास को सार्थक समझूँगा |

*****

8. **संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)**

	ग्रंथो के नाम		**ग्रंथकार**
■	आवर्तन	-	पं.सुरेश तळवलकर
■	तालप्रकाश	-	भगवत शरण शर्मा
■	तबला	-	पं.अरविंद मुळगांवकर
■	इजाजत	-	पं.अरविंद मुळगांवकर
■	आठवणींचा डोह	-	पं.अरविंद मुळगांवकर
■	तबला वादन कला और शास्त्र	-	पं. सुधीर माईणकर
■	संगीत कला आणि शिक्षण	-	पं.सुधीर माईणकर
■	तबला वादन में निहित सौंदर्य	-	पं.सुधीर माईणकर
■	ताल परिचय	-	पं. गिरीशचंद्र श्रीवास्तव
■	तबला पुराण	-	पं.विजयशंकर मिश्रा
■	तबला ग्रंथ	-	पं. छोटेलाल मिश्रा
■	ताल प्रसून	-	पं.छोटेलाल मिश्रा
■	भारतीय वाद्यांचा इतिहास	-	प्रा. ग.ह. तारळेकर
■	तबला कौमुदी	-	ड़ॉ. रामशंकर दास
■	यु.जी.सी. नेट़.	-	शिखा स्नेही, आकांशा सारस्वत
■	परिक्षार्थ तबला विशारद	-	पं.अमोद दंडगे
■	सर्वांगीण तबला	-	पं.आमोद दंडगे
■	तालार्णव	-	पं.आमोद दंडगे
■	तबले का उद्‌गम, विकास, और वादन शैलियाँ	-	डॉ.योगमाया शुक्ल, दिल्ली

- तबला गाईड़ - पं.सुरेश सामंत
- तबला वादन कि विस्तारशील रचनाएँ - जमूना प्रसाद पट़ेल
- संगीत तबला अंक - ड़ॉ.लक्ष्मीनारायण गर्ग
- संगीत विशारद - ड़ॉ.लक्ष्मीनारायण गर्ग
- तबले पर दिल्ली और पूरब - पं. सत्यनारायण वशिष्ट़
- ताल प्रबंन्ध - पं.विजयशंकर मिश्रा
- तबला संगत एवं कलाकार - ड़ॉ.भीमसेन सरल
- तबला संचयन - ड़ॉ.एस.आर.चिश्चिी
- देहली का तबला - पं.उमेश मोघे
- तबले के विभिन्न घरानों के मूर्धन्य कलाकारों के साक्षात्कार
- संगीत कला विहार अंक - मासिक
  (संपादक ः अ.भा.गां.म.वि.मंड़ल, मुंबई)
- इंटरनेट अधिकृत वेबसाईट
- शोधगंगा - शोधपत्र

*****